ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 217-219

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

जनसंचार माध्यमों का उद्‌भव एवं विकास

सुजीत कुमार यादव

असिस्टेण्ट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, नेजाती सुभाषचन्द्र बोस स्नातकोत्तर महाविद्यालय, देवगाँव, आजमगढ़ (उ0प्र0), भारत

Received- 13.08.2020, Revised- 17.08.2020, Accepted - 19.08.2020 E-mail: - hemantkumarasthana1955@gmail.com

सारांश : ***जनसंचार का अभिप्राय बहुल्य या भारी मात्रा अथवा भारी आकार के क्षेत्र में फैले लोगों तक संचार माध्यमों द्वारा संदेश या सूचना का पहुँचाना है । चार्ल्स राइट (1960) ने अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत परिभाषित संदर्भ में टिप्पणी करते हुए कहा है, कि जनसंचार तीन परिवत्यों श्रोता–दर्शक समूह से अपेक्षाकृत बड़ा एवं बिखरा होता है, श्रोता/दर्शक समूह परिवर्तनीय और भिन्न–भिन्न लक्षणों वाले सामाजिक वर्गों से बना है तथा श्रोता–दर्शक अज्ञात होता है, अर्थात् श्रोता–दर्शक एवं संचारकर्ता प्रायः एक दूसरे से परिचित नहीं होते।***

कुंजीभूत शब्द– जनसंचार, अभिप्राय, बहुल्य, आकार, संचार, माध्यमों, संदेश, अपेक्षाकृत, विस्तृत, परिभाषित ।

जनसंचार माध्यम वर्तमान औद्योगिक एवं तकनीकी समाज की देन है। प्राचीन समाज में लोग जब छोटे–छोटे समूहों में निवास करते थे, उस समय आमने–सामने के सम्पर्क से मानव जुड़ा था। वर्तमान समय में लाखों लोगों तक जनसंचार माध्यमों द्वारा सूचनाएँ प्रेषित की जाती हैं। यह सब तकनीकी क्रान्ति का परिणाम है।

जनसंचार के अन्तर्गत संदेशों का स्थापक रूप से निर्माण एवं प्रेषण होता है। शिकागो स्कूल जिसने "जन" (मानस) की आधुनिक अवधारणा प्रस्तुत की है, जनसंचार को सामाजिक व्यवस्था और एकीकरण की समस्याओं के सशक्त निदान और अव्यवस्थित परिवर्तन के कारक के रूप में चित्रत किया है। मैक कारमैन (1961) तथा कुप्पुस्वामी (1984) के अनुसार आधुनिक समाजों जनसंचार माध्यमों का प्रमुख कार्य है, समाजीकरण एवं टीकाकरण, लेकिन ऐसा नहीं है कि जनसंचार माध्यम ये कार्य अन्य संस्थाओं के असफलता के कारण करते हैं। इनके अनुसार एक परिवर्तनशील समाज में आवश्यक रूप से अनुभव विखण्डित होते हैं। जनसंचार माध्यमों के संदेशों का प्रभाव व्यक्ति एवं उसके सामाजिक व्यवहार की रक्षा में महत्वपूर्ण होता है। व्यक्ति के अंर्तवैयक्तिक संबंध परिवार एवं अन्य प्राथमिक समूह भी जनसंचार माध्यमों से प्रभावित होते हैं। फ्रैंकफर्ट स्कूल के आलोचक विश्लेषकों ने जनसंचार के एकीकरण प्रभाव वाले नकारात्मक पहलू में बहुत अधिक दिलचस्पी ली थी, उनकी यह दिलचस्पी लोकप्रिय संस्ति एवं मूल्यों के विकास तथा जनसंचार द्वारा स्थापित की जा रही प्रभावशाली जनप्रिय संस्कृति की कारक, बदलती हुई तकनीकों में थी जिसमें क्रांतिकारी सामाजिक परिवर्तनों के दिशा परिवर्तन (मार्क्सवाद से ऐतिहासिक परितर्वन की प्रक्रिया) की क्षमता थी। रिर्क्स पैटरसन तथा जेन्सन ने जनसंचार प्रणाली के पाँच सामान्य लक्षण बतायें हैं, जो जनसंचार की प्रकृति को स्पष्ट करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं –

1. आवश्यक रूप से जनसंचार श्रोता या श्रोता से संदेश प्राप्तकर्ता के बीच एक मार्ग है। दूसरी तरफ अन्तर्वैयक्तिक संचार में संचार श्रोता से श्रोता/दर्शक और फिर श्रोता/दर्शक से श्रोता तक जाता है। इस प्रकार संबद्ध पक्षों के बीच आदान – प्रदान जारी रहता है। लेकिन जनसंचार के अंतर्गत संदेश, संचार माध्यमों से श्रोता/दर्शक की ओर तो जाता है। परन्तु संपादक के नाम पत्र, श्रोता आकलन (आडियन्स रेटिंग बाक्स ऑफिस रिसीट) और इसी प्रकार की अन्य प्रति पुष्टियों के अतिरिक्त यह पुनः वापस नहीं जाता। जैसा कि निकोलस जॉनसन कहते हैं, कि यह सच है कि हम अपने टेलीविजन से बात कर सकते हैं, लेकिन हम ऐसा अप्रत्यक्ष रूप से और पर्याप्त विलंब के साथ ही कर सकते हैं।
2. जनसंचार प्रणाली के अंतर्गत द्विमार्गी चयन प्रक्रिया निहित होती है। इस चयन प्रक्रिया का प्रथम भाग संपूर्ण जनसंख्या के उस अंश के संचार माध्यमों द्वारा चयन को इंगित करता है, जिसे वह अपना श्रोता–दर्शक बनाने का प्रयास करेगा और इस प्रकार अपने संदेशों को एक समूह विशेष को प्रेषित करेगा। इस चयन प्रक्रिया का दूसरा भाग उपलब्ध सभी संचार माध्यमों में संचार माध्यम से उस विशिष्ट उपखण्ड के चयन को प्रस्तुत करता है, जिससे वह व्यक्ति विशेष रुचि रखेगा। उदाहरणार्थ व्यक्ति अपने पंसद के पत्र–पत्रिकाओं को पढ़ सकता है।
3. जैसे–जैसे तकनीक विकसित होती है, विभिन्न संचार माध्यमों की आवश्यकता में ह्रास होता है। उदाहरणार्थ यदि देश भर के श्रोताओं की एक बड़ी संख्या को हस्तलिखित समाचार वितरित करना हो तो इस कार्य में हजारों व्यक्तियों

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

को लगाना पड़ेगा या किसी व्यक्ति को पूरा देश भ्रमण करना पड़ेगा , लेकिन उन्नत तकनीक के साथ परिस्थिति नाटकीय रूप में बदल जाती है। एक टेलीविजन स्टेशन एक दिन के समय में बाँटा जा सकता है। अन्य शब्दों में कहा जाय तो लाखों व्यक्तियों तक पहुँचाने के लिए कम संचार साधनों की आवश्यकता है।

4. जनसंचार माध्यमों द्वारा प्रसारित जन संदेशों को बहुसंख्यक लोगों द्वारा प्राप्त करने के कारण संचार माध्यमों का प्रत्येक व्यक्ति के लिए स्वयं को अनुकूल करना संभव नहीं है। हाँ प्रसारित संदेशों की प्र.ति के लिए यह आवश्यक है, कि यह अधिकतर लोगों के प्रति उन्मुख हो। इस प्रकार मीडिया संभाव्य ग्राहकों की अधिकतम संख्या को अपने श्रोता/दर्शक रूप में प्राप्त करने का प्रयत्न करता है।

5. जनसंचार माध्यम वे सामाजिक संस्थान है, जो उस सामाजिक वातावरण से प्रभावित होते हैं, जिसमें वे क्रियाशील है। विलोमतः जनसंचार माध्यम भी सामाजिक वातावरण को प्रभावित करते हैं। दूसरे शब्दों में जनसंचार माध्यमों एवं समाज के बीच में आदान–प्रदान का संबंध है, प्रत्येक एक–दूसरे को प्रभावित करता है।

उदाहरणार्थ यदि संचार माध्यम समाज की आर्थिक दशा को प्रभावित करते हैं तो ये माध्यम भी समाज की आर्थिक दशा से उसी प्रकार प्रभावित होते हैं।

जनसंख्या का प्रभाव एवं विश्लेषण –

जनसंचार के रूप में ऐसी शक्ति का विकास हुआ जिसका प्रभाव अपरिमित ही नहीं अपरिमेय है। जनसंचार का वर्तमान समाज पर गहरा प्रभाव है। इसी के द्वारा समाज की मनोदशा, विचार, संस्कृति एवं जीवन दशाएं नियंत्रित तथा निर्देशित हो रही है। जनसंचार के द्वारा व्यक्तियों के समाजीकरण की प्रक्रिया समाज में चलती रहती है।

सांस्कृतिक विकास – जनसंचार माध्यमों का सबसे अधिक प्रभाव सांस्.तिक क्षेत्र पर पड़ा है। संसार की विभिन्न संस्.तियाँ देश के विभिन्न आयामों से सम्बन्धित कार्यक्रम, विस्तृत होते प्राचीन इतिहास को नई पीढ़ी के सामने जीवन्त रूप से प्रस्तुत किया है। आज विज्ञान ने हमारे जीवन को इस तरह प्रभावित किया है कि लोग अपने प्राचीन इतिहास, कला, रीति–रिवाजों, धार्मिक अनुष्ठानों आदि को उपेक्षा की .ष्टि से देखने लगे थे। जनसंचार माध्यम, विशेषकर दूरदर्शन के कार्यक्रमों ने प्राचीन कला, परम्पराओं साहित्य आदि को प्रदर्शित कर अतीत को बहुत आकर्षक और वर्तमान के समय को जीवन्त बना दिया। अभी हाल में दूरदर्शन पर प्रदर्शित किये गये धारावाहिक 'रामायण', 'महाभारत', ऊँ नमः शिवाय, भारत एक खोज, जय गणेश, नूरजहाँ, अकबर आदि कार्यक्रमों का उल्लेख इसी संदर्भ में किया जा सकता है ।

सामाजिक विकास – जनसंचार माध्यमों ने हमारे सामाजिक जीवन को भी अत्यधिक प्रभावित किया है। जनसंचार माध्यमों ने सामाजिकता को बढ़ाने में अपेक्षा.त बाधा ही पहुँचाई है। हम अपने समाज, पड़ोसी, मित्रों से कटकर रह गये हैं।

आज विश्व समाज एक संक्रमण काल से गुजर रहा है। एक तरफ छोटे–छोटे सामाजिक घरोंदे दूर हो रहे हैं, तो दूसरी तरफ विश्व समाज का निर्माण हो रहा है। इस दिशा में संचार माध्यम के कार्यक्रम संसार के कोने–कोने में स्थित सामाजिक व्यवस्थाओं की जानकारी प्रदान करने में प्रभावशाली रहे हैं। अपने देश में अनेक ऐसे सामाजिक संगठन हैं कि उनके अपने स्वरूप, कार्यक्रम तथा संगठन की जानकारी अब तक बहुत सीमित रही है। किंतु जनसंचार माध्यमों द्वारा परिचित लगने लगे हैं। संचार माध्यमों में दूरदर्शन द्वारा सुदूर ग्राम में रहने वाले तथा आदिवासी क्षेत्र के निवासियों को महानगरीय समाज का परिचय कराया।

शैक्षणिक विकास – शैक्षिक क्षेत्र में भी दूरदर्शन का असीमित प्रभाव पड़ा है। शिक्षा तीनों साधनों औपचारिक, अनौपचारिक पर बराबर प्रभाव पड़ा है। पहले आविष्कृत ज्ञान पाठ्य पुस्तक के माध्यम से विद्यार्थियों तक पहुँचता था, इसलिए आविष्कार एवं विद्यार्थियों की जानकारी दोनों के समयों के बीच काफी लम्बा अन्तराल होता था, किन्तु अब शाम को खोज हुई और सुबह संचार माध्यमों द्वारा उसकी जानकारी हो जाती है। यह प्रभाव केवल विज्ञान की ही शिक्षा पर नहीं पड़ा है, बल्कि अन्य क्षेत्रों इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र, साहित्य, संगीत आदि पर भी पड़ा है।

स्वास्थ्य एवं स्वच्छता सम्बन्धी प्रभाव – जनसंचार माध्यमों से लोगों के स्वास्थ्य संबंधी जानकारी में बहुत विकास हुआ है। व्यक्तिगत सफाई जैसे हाथ–मूंह धोना, भोजन का रख–रखाव, भोजन पकाने सम्बन्धी जानकारी, बीमारियों से बचने संबंधी जानकारी, बीमारी का उपचार, टीकाकरण, पौष्टिक भोजन की जानकारी, शरीर में आवश्यक पोषक तत्वों की जानकारी, बच्चों की देख–भाल, विभिन्न मौसम के कुप्रभाव से बचने के उपाय आदि की जानकारी संबंधी कॉलम, स्तंभ एवं परिचर्चा समाचार–पत्रों, मैंगजीनों एवं दूरदर्शन पर विशिष्ट रूप से प्रसारित किये जाते हैं।

आर्थिक विकास – जनसंचार माध्यमों का प्रभाव ही है, कि आज ज्यादातर नागरिक शेयर, स्टॉक मार्केट, एन०एस०ई०, नास्टाक आदि प्रत्ययों की जानकारी रखते हैं और अपनी आर्थिक स्थिति की मजबूती हेतु सतत प्रयत्नशील

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

रहते हैं। आज जनता में अपनी आर्थिक स्थिति के प्रति चेतना से दूरदर्शन पर सी०एन०बी०सी० चैनल, सहारा टी०वी० पर, जैन टी०वी० पर शेयर के मूल्य सम्बन्धी टेप चलाये जाते हैं, उतार–चढ़ाव के साथ ही विशेष घटनाओं को भी टी०वी० के साथ–साथ 'इलेक्ट्रानिक टाइम्स', बिजनेस वर्ल्ड' आदि समाचार–पत्र प्रमुखता से आर्थिक समाचारों की कवरेज से अपनी लोकप्रियता बनाये हुए हैं।

भारत जैसे देश में जहाँ जनसंख्या की एक अच्छी–खासी संख्या अनपढ़ हैं। फिल्म एवं दूरदर्शन ऐसे माध्यम हैं, जो लोगों की मनोवृत्ति एवं विचारधारा बदलने का कार्य कर रहा है। जनसंचार के माध्यम जनमानस के विचारों को परिवर्तित कर उन्हें सुधार के लिए प्रेरित कर रहे हैं। दहेज प्रथा, बाल–विवाह, नशामुक्ति, छुआ–छूत, नारी–शोषण, साम्प्रदायिकता, आतंकवाद, बाल मजदूरी आदि को दानव रूप में प्रस्तुत कर लोगों की विचारधारा में इनके प्रति धीरे–धीरे परिवर्तन किया है। उन्नसवीं सदी का प्रारंभ महिलाओं की निम्न स्थिति सुधारने की चेतना के साथ हुआ, क्योंकि स्त्रियों की दिनों–दिन गिरती हुई स्थिति को समाज के कुछ बुद्धजीवियों को झकझोर दिया और उन्हें समाज में समुचित स्थान दिलाने के लिए सामाजिक सुधार आंदोलन का नेतृत्व करने को बाध्य कर दिया। इस दिशा में राजाराम मोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सती प्रथा, बाल–विवाह, पर्दा–प्रथा जैसी कुरीतियों को समाप्त करने के लिए अनेक अधिनियम चलाये। सन् 1856 ई० में विधवा हैं।

पुनर्विवाह अधिनियम, 1929 में हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम और हिन्दू स्त्री का सम्पत्ति पर अधिकार अधिनियम 1937 ई0 में पारित हुआ। इस समय स्त्रियों की स्थिति में संतोषजनक सुधार हुआ। संचार के साधनों की बढ़ती प्रभावशीलता ने भारतीय औद्योगिक समाज में जाति–व्यवस्था को प्रभावित किया है, जाति व्यवस्था में संचार साधनों ने शिथिलता उत्पन्न की उसका प्रभाव विवाह जैसी संस्था पर पड़ना स्वाभाविक था। संचार के आधुनिक युग में विवाह जैसी सामाजिक संस्था के रूप में तेजी से परिवर्तन हुए, उनके फलस्वरूप विधवा विवाह, अंतर्जातीय विवाह, दहेज अभिशाप के कारण विवाह जैसी संस्था को दूरदर्शन और सिनेमा जैसी सशक्त जनसंचार माध्यमों ने शिक्षित तथा अशिक्षित दोनों ही वर्ग के दर्शकों को अत्यधिक प्रभावित किया है, जबकि समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं ने शिक्षित युवा वर्ग को, इस संस्था के प्रति उनके सोच में "परिवर्तन अभिकरण" की कारगर भूमिका निभाई हैं।

जनसंचार, आधुनिकीकरण के एजेंट की भाँति हैं। नये विचार, राजनीतिक ज्ञान एवं नये मूल्यों के अनुकरण में संचार साधनों का महत्वपूर्ण योगदान है। जनसंचार माध्यम प्रभावी ढंग से राजनीति, ज्ञान, सरकार, नेतृत्व में जुड़े हुए हैं। प्रजातंत्र में सजग प्रहरी की भूमिका निभा रही है। इनके द्वारा बाजार भाव एवं महत्वपूर्ण आर्थिक सूचनाएं भी प्राप्त होती हैं। विज्ञापन एवं सूचनाओं के द्वारा देश के वितरण एवं व्यावसायिक व्यवस्था को भी विकसित करते हैं। ये संचार के माध्यम चाहे समाचार–पत्र हों या पत्रिकाएं अथवा रेडियो, दूरदर्शन एवं फिल्म आदि सब क्रांति के द्वार पर खड़े हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Jean Paul Favre, (1979) : "Color and Under Communication" ABC Velag and Ander Novermber 15 BN 385504 Suitzerland. P. 81.
2. Ibid, p.8
3. Ibid, p.8-9
4. Ibid, p.79
5. Critic of Frankfurt School
6. S.H. Patterson, (1943) : "Social Aspects of industy" Mc grow Hill Book Company, New York and Landon.
7. S.H. Patterson, (1943) : "Social Aspects of industy" Mc grow Hill Book Company, New York and Landon.

*****

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*